

डॉ. ज्ञानराज काशिनाथ गायकवाड
स्म. ए. पी. एच. डी.
रीडर एवं अध्यक्ष,
पदवी तथा पदव्युत्तर हिन्दी-विभाग
श्री. शिवाजी महाविद्यालय, बाशी
[जिला - सोलापुर] - ४१३ ४११

// प्र मा ण - प त्र //
=====

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि, श्री. दिलीप कोंडीबा कसबे द्वारा शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की स्म. फिल उपाधि के हेतु प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध " रंगेय राधव की प्रिय कहानियाँ : एक मीमांसा । " [रंगेय राधव द्वारा सम्पादित " मेरी प्रिय कहानियाँ " इस पुस्तक के सन्दर्भ में] मेरे मार्गदर्शन में पूरा कर दिया गया है। प्रस्तुत लघु - शोध प्रबंध पूर्व-योजना के अनुसार पूरा हुआ है। इस शोध - प्रबंध का प्रत्येक पृष्ठ मैंने पढ़ा है और उसे विषयानुकूल पाया है।

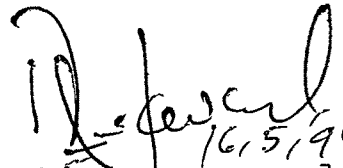
मैं यह भी प्रमाणित करता हूँ कि, इस शोध-प्रबंध में तथ्यों को प्रस्तुत करते हुए जो विवेचन - विश्लेषण किया गया है, वह सब मेरे निर्देशन के अनुसार सही है।

अतः मैं इसे परीक्षार्थ प्रस्तुत करने की संस्तुति करता

हूँ।

बाशी

दिनांक : १६.५.१९९४


[ज्ञा. का. गायकवाड]
शोध - निर्देशक

श्री. दिलीप कोंडोबा कसबे
मु.पो. मेडशिंगी
ता. सांगोला.
जि. सोलापूर
४१३३०७

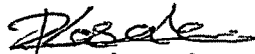
// प्र ति ज्ञा - प त्र //

मैं यह विश्वास के साथ कहता हूँ कि एम्.फिल्. उपाधि के हेतु प्रस्तुत लघु-शोधप्रबंध, " रंगेय राधव की प्रिय कहानियाँ : एक मीमांसा । " [रंगेय राधव द्वारा सम्पादित " मेरी प्रिय-कहानियाँ " इस पुस्तक के सन्दर्भ में] व्यक्त विचार मेरे अपने हैं तथा विवेचन विश्लेषण का ढंग स्वतंत्र ही है। यह * लघु-शोध प्रबंध इसके पूर्व अन्यत्र किसी विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है।

यह भी घोषित किया जाता है कि, यह कार्य पूरा करते समय मैंने अपने शोध निर्देशक के मार्गदर्शन के अनुसार प्रामाणिकता से काम किया है।

मेडशिंगी

दिनांक : १६/५/२४


[दि.को.कसबे]

शोध - कर्ता

